"इन्चोली भण्डारा जैसे अर्स का एक नजारा"

—श्री रामकुमार, लखनऊ

धन्य है भाग्य इन्चोली ग्राम वासियों और हम सुन्दर साथके जहाँ सतगुरु महाराज श्री राम रतन दास जी के चरण कमलों के स्पर्श से यह काली नदी के तट की भूमि पवित्र हुई और उन्हीं की शक्ति व स्वरूप से ब्राजमान सतगुरु श्री जगदीश चन्द्र जी इस स्थान को आश्रम का रूप देकर जगत में प्रकाश कर रहे हैं। धन्य है उन सुन्दर साथ के जिनकी तन, मन और धन की सेवा श्रीराज जी ने स्वीकार की। यहाँ पर भण्डारा तो हर वर्ष ही आयोजित किया जाता है किन्तु मुझे वर्ष १९८० में एक दिन का नजारा देखने को मिला जब श्रीराज जी की सवारी सहित मन्दिर की परिक्रमा की गई। सब सुन्दर साथ इतना प्रेम बिभोर होकर भजन–कीर्तन सहित परिक्रमा में था कि उस समय सांसारिक माया की कोई ताकत नहीं थी कि अपना असर कर सके। उस दिन यह पश्चाताप मुझे हुआ कि मुझे कई दिन पहले आना चाहिये था। उसी इच्छा की पूर्ति के लिए श्रीराज जी की कृपा से इस वर्ष हम २ अक्टूबर १९८१ को पहुंचे आश्रम पर। इस बार धनी श्री देवचन्द्र जी की चतुर्थ शताब्दी के समारोह के रूप भण्डारा मनाया गया जिसका प्रारम्भ २४ सितम्बर को श्री १०८ अखण्ड पारायण से हुआ था। श्रीराज जी के मन्दिर के हाल में 'स्वरूप साहब' इतने सुन्दर तरीके से सुव्यवस्थित पधराये गये थे कि देख कर दिल को प्रसन्न-चित कर रहे थे। स्वरूप साहब को अखण्ड पाठ में पढ़ते समय न कोई आवाज, न शोर और न ही किसी के चेहरे पर उदासी थी। अगरबत्ती और गुलाब जल की खुशबू से वातावरण में और भी शुद्धता थी। साथ-साथ तारतम पाठ की ४०० माला पूर्ण करने का कार्यक्रम चल रहा था। सुबह से रात और समय के हर क्षण का कार्यक्रम इस प्रकार निर्धारित था कि सुबह उठापन आरती, परिक्रमा फिर चर्चा, महिला सत्संग, मंच कार्यक्रम, रात्रि में भजन, किरतन कि अधिक से अधिक समय श्रीराज जी के चरणों में लग सके। सुन्दर साथ के लिये चाय नाश्ता, खाने का समय भी बिल्कुल घड़ी से बँधा था। श्री महराज जी द्वारा की गई व्यवस्था एक पूर्ण

Nijanand App

अनुशासन बद्ध रहती है इसी के परिणाम से इतने बड़े परिवार की पूर्ण व्यवस्था समय से होती देखी गई।

दण्डवत् परिक्रमा

अखण्ड पाठों की समाप्ति से पूर्व श्री राज जी के मन्दिर की परिक्रमा 'दण्डवत्' करनी थी जिसमें पूरी परिक्रमा दण्डवत् करने के लिये सुन्दर साथ पांच-पांच की कतारों में खड़ा हुआ। परिक्रमा शुरू हुई और मंच से आयोजन था। कुलजम स्वरूप के 'रास' किताब की प्रकरण की चौपाई का श्रवण जिस नजारे का शब्दों में वर्णन करना बड़ा कठिन है।

दई प्रदिक्षणा अति घणों,
कर दण्डवत् प्रणाम।
सहु साथना मनोरथ पूरजो,
आराधणी भी धाम ॥८३
मनना मनोरथ पूरण कींधा,
मारा अनेक वार।
वारणे जाय इन्द्रावती,
मारा अतमना आधार ॥८४ पृ० रास

सभी सुन्दर साथ इकट्ठा हुआ मन्दिर की परिक्रमा में और श्री सतगुरु महाराज जी और श्री कीकू भाई देसाई जो निजानन्द आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं, एक थाली में सिन्दूर लिये हर सुन्दर साथ को टीका लगाया और चरण छूना प्रारम्भ किया। इसे देख कर दिल एकदम द्रवित हो गया और आँखों से आँसू और मुँह से दुखभरी सिसकी निकली, देखते-देखते पूरा सुन्दर साथ इस भार को सहन नहीं कर पा रहे थे कि श्री सतगुरु महाराज जी सुन्दर साथ के चरण छूते एक अद्भुत दृष्य था, कितनी महानता है श्री महाराज जी में और मैं कितना अवगुण से भरा ढीठ यही विचार आता है फिर भी सभी अवगुणों का ध्यान न रखते हुए अपनाया हमें।

गुरु कंचन, गुरु पारस,
गुरु चन्दन परमान।
तुम सतगुरु दीपक भये,
किये जो आप समान ॥

इस दृश्य के बाद श्रीराज जी के मन्दिर में सभी सुन्दर साथ को अर्जी करनी थी।

श्रीराज श्यामा जी से अर्जी

सभी सुन्दर साथ को 'स्वरूप साहब' की आठ चौपाइयाँ दी गईं जिनसे अर्जी होनी थी सभी को चौपाई बोलने की इजाजत थी।

ऐसा खेल देखाइयाँ,
जो माँग लिया है हम।
अब कैसे अर्ज करूँ,
कहोगे माँगया तुम ॥
बल बुध आशा उमेद,
एक तुम राखी तुम पर।
मुझमें मेरा कछु ना रहना,
अब क्या कहूं क्यों कर ॥

Nijanand App

अब ज्यों जानो त्यों करो,
कछु रहा न हम पना हम ।
इन झूठी जिमी में बैठ के,
कहां कहूं तुमे खसम ।।
श्री महामत कहे में सरमिन्दी,
सब अवसर गयी भूल ।
ऐसी इन जुदागी मिने,
क्यों कहूं करो सनकूल ।।
मेरे धनी धाम के दुल्हा,
मैं कर ना सकी पहचान ।
सो रोऊँ मैं याद कर कर,
जो मारे हेत के बान ।।
तुम जो तुम्हारे गुण न छोड़े,
मैं करी बहुत दुष्टाई ।
मैं तो कर्म किये अति नीचे,
पर तुम राखी मूल सगाई ।।
प्रीतम मेरे प्राण के,
अंगना आत्म नूर ।
मन कमल पे खेल देखते,
सो ए दुख करो सब दूर ।।
श्री महामत कहे महबूब जी,
अब दीजे पट उड़ाए ।
नैना खोल के अंक भर,
दुल्हा लीजे कंठ लगाए ।।

श्रीराज जी से अर्जी की गई कि हमने दुःख का खेल मांगा जिस कारण इस नश्वर जगत में आना पड़ा अब यहां खेल देखते हुये जो भी गया है यहां के दुख सहे नहीं जाते । न ही मेरा बल और बुद्धि कुछ कर सकता है । इस नश्वर जगत में आकर हम आपको भूल गई । मैं अवगुणों से लिप्त हो गई और अनेकों दुष्टाइयां की किन्तु आपने सम्बन्ध और निसबत जानते हुये अपनाया । मेरे प्रीतम अब इस ब्रह्माण्ड को खत्म कर दो और परमधाम के अखण्ड सुख में ले चलो । इस समय ऐसा दुख भरा वातावरण था कि एक पल को भी इस माया की दुनियां में जीने का जी नहीं कर रहा था ।

अखण्ड पाठ की समाप्ती हुई आरती के साथ और फिर था ४ अक्टूबर को खतौली में जलूस का दिन ।

सभी सुन्दर साथ, पूर्ण उत्साह से खतौली में जलूस के लिए एकत्रित हुये । क्या नजारा था दो हाथियों पर श्री जी का झण्डा आसीन था, झाकियां सजी थीं ट्रेक्टरों पर जीपों पर और रास मण्डली, कीर्तन मण्डल अपने नृत्य करते चल रहे थे । कई मीलों की लाइन और पूर्ण अनुशासन में स्वयं प्रबन्ध था हमारे प्रणामी समाज का । नगरपालिका मैदान में सभा हुई जहां पर श्री रामरतन सिंह मंत्री, उत्तर प्रदेश ने भी हिस्सा लिया और यह स्वीकार किया अपने कथन में कि यह रास्ता है दुनियां के सभी जातपात और धर्मों वालों को एक सूत्र में बांधने के लिए और उस "पूर्णब्रह्म" की प्राप्ति के लिए । ०००

Nijanand App